

गोस्वामी तुलसीदास

विरचित

# रामचरितमानस



सुंदरकांड

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीरामचरितमानस पञ्चम सोपान

सुन्दरकाण्ड

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं  
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदांतवेद्यं विभुम् ।  
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं  
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये  
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।  
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे  
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं  
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।  
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं  
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

जामवंत के बचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥  
तब लागि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥१ ॥  
जब लागि आवों सीतहि देखी । होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी ॥  
यह कह नाइ सबन्हि कहूँ माथा । चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ॥ २ ॥  
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर । कौतुक कूदि चढेउ ता ऊपर ॥  
बार बार रघुबीर सँभारी । तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥ ३ ॥  
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥

जिमि अमोघ रघुपति कर बना । एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥ ४ ॥  
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी । तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥ ५ ॥

दोहा

हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।  
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम ॥ १ ॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा । जानें कहूँ बल बुद्धि बिसेषा ॥  
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता । पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता ॥ १ ॥  
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा । सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥  
राम काजु करि फिरि में आवौं । सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥ २ ॥  
तब तव बदन पैठिहउँ आई । सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥  
कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना । ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥ ३ ॥  
जोजन भरि तिहिं बदनु पसारा । कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ॥  
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ । तुरत पवनसुत बतिस भयऊ ॥ ४ ॥  
जस जस सुरसा बदनु बढावा । तासु दून कपि रूप देखावा ॥  
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा । अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥ ५ ॥  
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा । मागा बिदा ताहि सिरु नावा ॥  
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा । बुधि बल मरमु तोर में पावा ॥ ६ ॥

दोहा

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।  
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥ २ ॥

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई ॥ करि माया नभु के खग गहई ॥  
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ॥ १ ॥  
गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई । एहि बिधि सदा गगनचर खाई ॥  
सोइ छल हनुमान कहँ कीन्हा । तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥ २ ॥  
ताहि मारि मारुतसुत बीरा । बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥  
तहाँ जाइ देखी बन सोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥ ३ ॥

नाना तरु फल फूल सुहाए । खग मृग बृंद देखि मन भाए ॥  
 सैल बिसाल देखि एक आगें । ता पर धाइ चढेउ भय त्यागें ॥ ४ ॥  
 उमा न कछु कपि कै अधिकाई ॥ प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥  
 गिरि पर चढि लंका तेहि देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ॥ ५ ॥  
 अति उतंग जलनिधि चहु पासा । कनक कोटि कर परम प्रकासा ॥ ६ ॥

## छंद

कनक कोटि बिचित्र मणि कृत सुंदरायतना घना ।  
 चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथी चारु पुर बहुबिधि बना ॥  
 गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै ।  
 बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै ॥ १ ॥

बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं ।  
 नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥  
 कहूँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ।  
 नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥ २ ॥

करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ।  
 कहूँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥  
 एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ।  
 रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ॥ ३ ॥

## दोहा

पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।  
 अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥ ३ ॥

मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥  
 नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥ १ ॥  
 जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लागि चोरा ॥  
 मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर बमत धरनीं डनमनी ॥ २ ॥

पुनि संभारि उठी सो लंका । जोरि पानि कर बिनय ससंका ॥  
जब रावनहि ब्रह्म कर दीन्हा । चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥ ३ ॥  
बिकल होसि तैं कपि कै मारे । तब जानेसु निसिचर संघारे ॥  
तात मोर अति पुन्य बहूता । देखेँ नयन राम कर दूता ॥ ४ ॥

दोहा

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।  
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥ ४ ॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदयँ राखि कोसलपुर राजा ॥  
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई । गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥ १ ॥  
गरुड सुमेरु रेनु सम ताही । राम कृपा करि चितवा जाही ॥  
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥ २ ॥  
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा । देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ॥  
गयउ दसानान मंदिर माहीं । अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ॥ ३ ॥  
सयन किएँ देखा कपि तेही । मंदिर महुँ न दीखि बैदेही ॥  
भवन एक पुनि दीख सुहावा । हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥ ४ ॥

दोहा

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ ।  
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराइ ॥ ५ ॥

लंका निसिचर निकर निवासा । इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥  
मन महुँ तरक करें कपि लागा । तेहीं समय बिभीषनु जागा ॥ १ ॥  
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा । हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥  
एहि सन हठि करिहउ पहिचानी । साधु ते होइ न कारज हानी ॥ २ ॥  
बिप्र रूप धरि बचन सुनाए । सुनत बिभीषन उठि तहँ आए ॥  
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई । बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥ ३ ॥  
की तुम्ह हरि दासन्ह महुँ कोई । मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥  
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी । आयहु मोहि करन बड़भागी ॥ ४ ॥

## दोहा

तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।  
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥ ६ ॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ॥  
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा । करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥ १ ॥  
तामस तनु कछु साधन नाहीं । प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥  
अब मोहि भा भरोस हनुमंता । बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता ॥ २ ॥  
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा । तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥  
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती । करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥ ३ ॥  
कहहु कवन में परम कुलीना । कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ॥  
प्रात लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिले अहारा ॥ ४ ॥

## दोहा

अस में अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर ।  
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥ ७ ॥

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी । फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥  
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा । पावा अनिर्बाच्य विश्रामा ॥ १ ॥  
पुनि सब कथा बिभीषन कही । जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही ॥  
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखी चलेउँ जानकी माता ॥ २ ॥  
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥  
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । बन असोक सीता रह जहवाँ ॥ ३ ॥  
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा । बैठेहिं बीति जात निसि जामा ॥  
कृस तनु सीस जटा एक बेनी । जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥ ४ ॥

## दोहा

निज पद नयन दिउँ मन राम पद कमल लीन ।  
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥ ८ ॥

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई । करइ बिचार करौं का भाई ॥  
 तेहि अवसर रावनु तहुँ आवा । संग नारि बहु किएँ बनावा ॥ १ ॥  
 बहु बिधि खल सीतहि समुझावा । साम दान भय भेद देखावा ॥  
 कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥ २ ॥  
 तव अनुचरीं करेउँ पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ॥  
 तृन धरि ओट कहति बैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥ ३ ॥  
 सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ॥  
 अस मन समुझु कहति जानकी । खल सुधि नहिं रघुबीर बान की ॥४ ॥  
 सठ सूर्ने हरि आनेहि मोही । अधम निलज्ज लाज नहिं तोही ॥ ५ ॥

## दोहा

आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।  
 परुष बचन सुनि काढि असि बोला अति खिसिआन ॥ ९ ॥

सीता तैं मम कृत अपमाना । कटिहउँ तब सिर कठिन कृपाना ॥  
 नाहिं त सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥ १ ॥  
 स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंदर ॥  
 सो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥ २ ॥  
 चंद्रहास हरु मम परितापं । रघुपति बिरह अनल संजातं ॥  
 सीतल निसित बहसि बर धारा । कह सीता हरु मम दुख भारा ॥ ३ ॥  
 सुनत बचन पुनि मारन धावा । मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ॥  
 कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ॥ ४ ॥  
 मास दिवस महुँ कहा न माना । तौ मैं मारबि काढि कृपाना ॥ ५ ॥

## दोहा

भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद ।  
 सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥ १० ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन बिबेका ॥

सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥ १ ॥  
 सपनें बानर लंका जारी । जातुधान सेना सब मारी ॥  
 खर आरूढ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥ २ ॥  
 एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहुँ बिभीषन पाई ॥  
 नगर फिरी रघुबीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥ ३ ॥  
 यह सपना में कहउँ पुकारी । होइहि सत्य गएँ दिन चारी ॥  
 तासु बचन सुनि ते सब डरीं । जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥ ४ ॥

## दोहा

जहँ तहँ गई सकल तब सीता कर मन सोच ।  
 मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥ ११ ॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी । मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥  
 तजौं देह करु बेगि उपाई । दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई ॥ १ ॥  
 आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहु लगाई ॥  
 सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥ २ ॥  
 सुनत बचन पद गहि समुझाएसि । प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ॥  
 निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥  
 कह सीता बिधि भा प्रतिकूला । मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला ॥  
 देखिअत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकठ तारा ॥ ४ ॥  
 पावकमय ससि स्रवत न आगी । मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥  
 सुनहि बिनय मम बिटप असोका । सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥ ५ ॥  
 नूतन किसलय अनल समाना । देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥  
 देखि परम बिरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कल्प सम बीता ॥ ६ ॥

## दोहा

कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।  
 जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥ १२ ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥



चकित चितव मुदरी पहिचानी । हरष विषाद हृदयँ अकुलानी ॥ १ ॥  
 जीति को सकड़ अजय रघुराई । माया तें असि रचि नहिं जाई ॥  
 सीता मन बिचार कर नाना । मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥ २ ॥  
 रामचंद्र गुन बरनेँ लागा । सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥  
 लागीं सुनेँ श्रवन मन लाई । आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥ ३ ॥  
 श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई । कही सो प्रगट होति किन भाई ॥  
 तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ ॥ ४ ॥  
 राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुनानिधान की ॥  
 यह मुद्रिका मातु मैं आनी । दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥ ५ ॥  
 नर बानरहि संग कहु कैसेँ । कही कथा भई संगति जैसेँ ॥ ६ ॥

दोहा

कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास ।  
 जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥ १३ ॥

हरिजन हानि प्रीति अति गाढी । सजल नयन पुलकावलि बाढी ॥  
 बूडत बिरह जलधि हनुमाना । भयहु तात मो कहँ जलजाना ॥ १ ॥  
 अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥  
 कोमलचित कृपाल रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥ २ ॥  
 सहज बानि सेवक सुख दायक । कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥  
 कबहुँ नयन मम सीतल ताता । होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ॥ ३ ॥  
 बचनु न आव नयन भरे बारी । अहह नाथ हों निपट बिसारी ॥  
 देखि परम बिरहाकुल सीता । बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥ ४ ॥  
 मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥  
 जनि जननी मानहु जियँ ऊना । तुम्ह ते प्रेमु राम केँ दूना ॥ ५ ॥

दोहा

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर ।  
 अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥ १४ ॥

कहेउ राम बियोग तव सीता । मो कहूँ सकल भए बिपरीता ॥  
 नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू । कालनिसा सम निसि ससि भानू ॥ १ ॥  
 कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा । बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥  
 जे हित रहे करत तेइ पीरा । उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ॥ २ ॥  
 कहेहू तें कछु दुख घटि होई । काहि कहौं यह जान न कोई ॥  
 तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥ ३ ॥  
 सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं । जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥  
 प्रभु संदेसु सुनत बैदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥ ४ ॥  
 कह कपि हृदयँ धीर धरु माता । सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥  
 उर आनहु रघुपति प्रभुताई । सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥ ५ ॥

## दोहा

निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु ।  
 जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥ १५ ॥

जौं रघुबीर होति सुधि पाई । करते नहिं बिलंबु रघुराई ॥  
 राम बान रबि उएँ जानकी । तम बरुथ कहँ जातुधान की ॥ १ ॥  
 अबहिं मातु में जाऊँ लवाई । प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥  
 कछुक दिवस जननी धरु धीरा । कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ॥ २ ॥  
 निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं । तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥  
 हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना । जातुधान अति भट बलवाना ॥ ३ ॥  
 मोरें हृदय परम संदेहा । सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा ॥  
 कनक भूधराकार सरीरा । समर भयंकर अतिबल बीरा ॥ ४ ॥  
 सीता मन भरोस तब भयऊ । पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥ ५ ॥

## दोहा

सुनु मात साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल ।  
 प्रभु प्रताप तें गरुडहि खाइ परम लघु ब्याल ॥ १६ ॥

मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥

आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना । होहु तात बल सील निधाना ॥ १ ॥  
 अजर अमर गुननिधि सुत होहू । करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥  
 करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना । निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥ २ ॥  
 बार बार नाएसि पद सीसा । बोला बचन जोरि कर कीसा ॥  
 अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता । आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥ ३ ॥  
 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥  
 सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥ ४ ॥  
 तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं । जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥ ५ ॥

दोहा

देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु ।  
 रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥ १७ ॥

चलेउ नाइ सिर पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तौरें लागा ॥  
 रहे तहां बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥ १ ॥  
 नाथ एक आवा कपि भारी । तेहिं असोक बाटिका उजारी ॥  
 खाएसि फल अरु बिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥ २ ॥  
 सुनि रावन पठए भट नाना । तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥  
 सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥ ३ ॥  
 पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥  
 आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥ ४ ॥

दोहा

कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि ।  
 कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्केट बल भूरि ॥ १८ ॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । पठएसि मेघनाद बलवाना ॥  
 मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही । देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥ १ ॥  
 चला इंद्रजित अतुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥  
 कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥ २ ॥

अति बिसाल तरु एक उपारा । बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥  
 रहे महाभट ताके संगी । गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ॥ ३ ॥  
 तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥  
 मुठिका मारि चढा तरु जाई । ताहि एक छन मुरुछा आई ॥ ४ ॥  
 उठि बहोरि कीन्हसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥ ५ ॥

## दोहा

ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार ।  
 जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥

ब्रह्मबान कपि कहूँ तेहिं मारा । परतिहुँ बार कटकु संघारा ॥  
 तेहिं देखा कपि मुरुछित भयउ । नागपास बांधेसि लै गयउ ॥ १ ॥  
 जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भव बंधन काटहिं नर ग्यानी ॥  
 तासु दूत कि बंध तरु आवा । प्रभु कारज लागि कपिहिं बँधावा ॥ २ ॥  
 कपि बंधन सुनि निसिचर धार । कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥  
 दसमुख सभा दीखि कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥ ३ ॥  
 कर जोरें सुर दिसिप बिनीता । भृकुटि बिलोकत सकल सभिता ॥  
 देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुँ गरुड असंका ॥४ ॥

## दोहा

कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद ।  
 सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ बिषाद ॥ २० ॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा । केहि कें बल घालेहि बन खीसा ॥  
 की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही । देखउँ अति असंक सठ तोही ॥ १ ॥  
 मारे निसिचर केहिं अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा ॥  
 सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया । पाइ जासु बल बिरचित माया ॥ २ ॥  
 जाकें बल बिरंचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा ॥  
 जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥ ३ ॥  
 धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता । तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ॥

हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा । तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥ ४ ॥  
 खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली । बधे सकल अतुलित बलसाली ॥ ५ ॥

दोहा

जाके बल लवलेस तैं जितेहु चराचर झारि ।  
 तासु दूत में जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥ २१ ॥

जानेउ में तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई ॥  
 समर बालि सन करि जसु पावा । सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ॥१॥  
 खायउँ फल प्रभु लागी भूखा । कपि सुभाव तैं तोरेउँ रूखा ॥  
 सब कैं देह परम प्रिय स्वामी । मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥ २ ॥  
 जिन्ह मोहि मारा ते में मारे । तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे ॥  
 मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा । कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥ ३ ॥  
 बिनती करउँ जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥  
 देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी । भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ॥४॥  
 जाके डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई ॥  
 तासों बयरु कबहुँ नहिं कीजै । मोरे कहैं जानकी दीजै ॥ ५ ॥

दोहा

प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि ।  
 गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥ २२ ॥

राम चरन पंकज उर धरहू । लंकाँ अचल राज तुम्ह करहू ॥  
 रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका । तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥१॥  
 राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥  
 बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषन भूषित बर नारी ॥ २ ॥  
 राम बिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ॥  
 सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं ॥ ३ ॥  
 सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी । बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥  
 संकर सहस बिष्नु अज तोही । सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥ ४ ॥

## दोहा

मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।  
भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ॥ २३ ॥

जदपि कही कपि अति हित बानी । भगति बिबेक बिरति नय सानी ॥  
बोला बिहसि महा अभिमानी । मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ॥ १ ॥  
मृत्यु निकट आई खल तोही । लागेसि अधम सिखावन मोही ॥  
उलटा होइहि कह हनुमाना । मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥ २ ॥  
सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना । बेगि न हरहु मूढ कर प्राणा ॥  
सुनत निसाचर मारन धाए । सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए ॥ ३ ॥  
नाइ सीस करि बिनय बहूता । नीति बिरोधा न मारिअ दूता ॥  
आन दंड कछु करिअ गोसाँई । सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥ ४ ॥  
सुनत बिहसि बोला दसकंधर । अंग भंग करि पठइअ बंदर ॥ ५ ॥

## दोहा

कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।  
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥ २४ ॥

पूँछ हीन बानर तहँ जाइहि । तब सठ निज नाथहि लइ आइहि ॥  
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई । देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥ १ ॥  
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहाय सारद मैं जाना ॥  
जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचें मूढ सोइ रचना ॥ २ ॥  
रहा न नगर बसन घृत तेला । बाढी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥  
कौतुक कहँ आए पुरबासी । मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ॥ ३ ॥  
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥  
पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥ ४ ॥  
निबुकि चढेउ कपि कनक अटारीं । भइँ सभीत निसाचर नारीं ॥ ५ ॥

## दोहा

हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।  
अट्टहास करि गर्जा कपि बढि लाग अकास ॥ २५ ॥

देह बिसाल परम हरुआई । मंदिर तें मंदिर चढ धाई ॥  
जरइ नगर भा लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ॥ १ ॥  
तात मातु हा सुनिअ पुकारा । एहिं अवसर को हमहि उबारा ॥  
हम जो कहा यह कपि नहिं होई । बानर रूप धरें सुर कोई ॥ २ ॥  
साधु अवग्या कर फलु ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥  
जारा नगर निमिष एक माहीं । एक बिभीषन कर गृह नाही ॥ ३ ॥  
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥  
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥ ४ ॥

दोहा

पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।  
जनकसुता के आगें ठाढ भयउ कर जोरि ॥ २६ ॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा ॥  
चूडामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥ १ ॥  
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥  
दीन दयाल बिरिदु सँभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥ २ ॥  
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु । बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥  
मास दिवस महुँ नाथ न आवा । तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ॥ ३ ॥  
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राणा । तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥  
तोहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती ॥ ४ ॥

दोहा

जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह ।  
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥ २७ ॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी ॥

नाघि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ॥ १ ॥  
 हरषे सब बिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥  
 मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा । कीन्हैसि रामचंद्र कर काजा ॥ २ ॥  
 मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि बारी ॥  
 चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥ ३ ॥  
 तब मधुबन भीतर सब आए । अंगद संमत मधु फल खाए ॥  
 रखवारे जब बरजन लागे मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥ ४ ॥

## दोहा

जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज ।  
 सुन सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ॥ २८ ॥  
 जौं न होति सीता सुधि पाई । मधुबन के फल सकहिं कि खाई ॥  
 एहि बिधि मन बिचार कर राजा । आइ गए कपि सहित समाजा ॥ १ ॥  
 आइ सबन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ॥  
 पूँछी कुसल कुसल पद देखी । राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ॥ २ ॥  
 नाथ काजु कीन्हैउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राणा ॥  
 सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ॥३॥  
 राम कपिन्ह जब आवत देखा । किँ काजु मन हरष बिसेषा ॥  
 फटिक सिला बैठे द्वौ भाई । परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥ ४ ॥

## दोहा

प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज ।  
 पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥ २९ ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया । जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥  
 ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर । सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥ १ ॥  
 सोइ बिजई बिनई गुन सागर । तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ॥  
 प्रभु कीं कृपा भयउ सब काजू । जन्म हमार सुफल भा आजू ॥ २ ॥  
 नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी । सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥



पवनतनय के चरित सुहाए । जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥ ३ ॥  
 सुनत कृपानिधि मन अति भाए । पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥  
 कहहु तात केहि भाँति जानकी । रहति करति रच्छा स्वप्राण की ॥ ४ ॥

## दोहा

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।  
 लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्राण केहिं बाट ॥ ३० ॥

चलत मोहि चूडामनि दीन्ही । रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥  
 नाथ जुगल लोचन भरि बारी । बचन कहे कछु जनककुमारी ॥ १ ॥  
 अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना । दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥  
 मन क्रम बचन चरन अनुरागी । केहिं अपराध नाथ हों त्यागी ॥ २ ॥  
 अवगुन एक मोर में माना । बिछुरत प्राण न कीन्ह पयाना ॥  
 नाथ सो नयनन्हि को अपराधा । निसरत प्राण करहिं हठि बाधा ॥ ३ ॥  
 बिरह अगिनि तनु तूल समीरा । स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥  
 नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी । जरें न पाव देह बिरहागी ॥ ४ ॥  
 सीता कै अति बिपति बिसाला । बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥ ५ ॥

## दोहा

निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति ।  
 बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥ ३१ ॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ॥  
 बचन कायँ मन मम गति जाही । सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ॥१ ॥  
 कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई । जब तव सुमिरन भजन न होई ॥  
 केतिक बात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥ २ ॥  
 सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥  
 प्रति उपकार करों का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥ ३ ॥  
 सुनु सत तोहि उरिन में नाहीं । देखेउँ करि बिचार मन माहीं ॥  
 पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥ ४ ॥

## दोहा

सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।  
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥ ३२ ॥

बार बार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥  
प्रभु कर पंकज कपि केँ सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥ १ ॥  
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ॥  
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥ २ ॥  
कहु कपि रावन पालित लंका । केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ॥  
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला बचन बिगत हनुमाना ॥ ३ ॥  
साखामृग केँ बडि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ॥  
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन बिधि बिपिन उजारा ॥ ४ ॥  
सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछु मोरि प्रभुताई ॥ ५ ॥

## दोहा

ता कहँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल ।  
तव प्रभावँ वडवानलहिं जारि सकइ खलु तूल ॥ ३३ ॥

नाथ भगति अति सुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ॥  
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥ १ ॥  
उमा राम सुभाउ जेहिं जाना । ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥  
यह संबाद जासु उर आवा । रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥ २ ॥  
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपि बृंदा । जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥  
तब रघुपति कपिपतिहिं बोलावा । कहा चलैं कर करहु बनावा ॥ ३ ॥  
अब बिलंबु केहि कारन कीजे । तुरत कपिन्ह कहँ आयसु दीजे ॥  
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी । नभ तें भवन चले सुर हरषी ॥ ४ ॥

## दोहा

कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ ।

नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥ ३४ ॥

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा । गर्जहिं भालु महाबल कीसा ॥  
 देखी राम सकल कपि सेना । चितइ कृपा करि राजिव नैना ॥ १ ॥  
 राम कृपा बल पाइ कपिंदा । भए पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा ॥  
 हरषि राम तब कीन्ह पयाना । सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥ २ ॥  
 जासु सकल मंगलमय कीती । तासु पयान सगुन यह नीती ॥  
 प्रभु पयान जाना बैदेहीं । फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं ॥ ३ ॥  
 जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई । असगुन भयउ रावनहि सोई ॥  
 चला कटकु को बरनै पारा । गर्जहिं बानर भालु अपारा ॥ ४ ॥  
 नख आयुध गिरि पादपधारी । चले गगन महि इच्छाचारी ॥  
 केहरिनाद भालु कपि करहीं । डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥ ५ ॥

छंद

चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।  
 मन हरष सब गंधर्ब सुर मुनि नाग किंनर दुख टरे ॥  
 कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।  
 जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥ १ ॥

सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई ।  
 गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥  
 रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।  
 जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥ २ ॥

दोहा

एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।  
 जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥ ३५ ॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका । जब तें जारि गयउ कपि लंका ॥  
 निज निज गृह सब करहिं बिचारा । नहिं निसिचर कुल केर उबारा ॥१ ॥

जासु दूत बल बरनि न जाई । तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥  
 दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥ २ ॥  
 रहसि जोरि कर पति पग लागी । बोली बचन नीति रस पागी ॥  
 कंत करष हरि सन परिहरहू । मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥ ३ ॥  
 समुझत जासु दूत कइ करनी । स्रवहिं गर्भ रजनीचर धरनी ॥  
 तासु नारि निज सचिव बोलाई । पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥ ४ ॥  
 तव कुल कमल बिपिन दुखदायई । सीता सीत निसा सम आई ॥  
 सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें । हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥ ५ ॥

## दोहा

राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक ।  
 जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक ॥ ३६ ॥

श्रवन सुनि सठ ता करि बानी । बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥  
 सभय सुभाउ नारि कर साचा । मंगल महुँ भय मन अति काचा ॥ १ ॥  
 जाँ आवइ मर्कट कटकाई । जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥  
 कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा । तासु नारि सभीत बडि हासा ॥ २ ॥  
 अस कहि बिहसि ताहि उर लाई । चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ॥  
 मंदोदरी हृदयँ कर चिंता । भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ॥ ३ ॥  
 बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई । सिंधु पार सेना सब आई ॥  
 बूझेसि सचिव उचित मत कहेहू । ते सब हँसे मष्ट करि रहेहू ॥ ४ ॥  
 जितेहु सुरासुर तब श्रम नाही । नर बानर केहि लेखे माहीं ॥ ५ ॥

## दोहा

सचिव बैद गुर तीनि जाँ प्रिय बोलहिं भय आस ।  
 राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥ ३७ ॥

सोइ रावन कहूँ बनी सहाई । अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥  
 अवसर जानि बिभीषनु आवा । भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥ १ ॥  
 पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन । बोला बचन पाइ अनुसासन ॥

जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता । मति अनुरूप कहँ हित ताता ॥ २ ॥  
 जो आपन चाहै कल्याना । सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ॥  
 सो परनारि लिलार गोसाई । तजउ चउथि के चंद कि नाई ॥ ३ ॥  
 चौदह भुवन एक पति होई । भूतद्रोह तिष्ठइ नहिँ सोई ॥  
 गुन सागर नागर नर जोऊ । अल्प लोभ भल कहइ न कोऊ ॥ ४ ॥

## दोहा

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।  
 सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिँ जेहि संत ॥ ३८ ॥

तात राम नहिँ नर भूपाला । भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥  
 ब्रह्म अनामय अज भगवंता । व्यापक अजित अनादि अनंता ॥ १ ॥  
 गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपा सिंधु मानुष तनुधारी ॥  
 जन रंजन भंजन खल ब्राता । बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥ २ ॥  
 ताहि बयरु तजि नाइअ माथा । प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥  
 देहु नाथ प्रभु कहँ बैदेही । भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥ ३ ॥  
 सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥  
 जासु नाम त्रय ताप नसावन । सोई प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥ ४ ॥

## दोहा

बार बार पद लागँ बिनय करँ दससीस ।  
 परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥ ३९ क ॥

मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।  
 तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥ ३९ ख ॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना । तासु बचन सुनि अति सुख माना ॥  
 तात अनुज तव नीति बिभूषन । सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥ १ ॥  
 रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥  
 माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ॥ २ ॥

सुमति कुमति सब कैं उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥  
 जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥ ३ ॥  
 तव उर कुमति बसी बिपरीता । हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥  
 कालराति निसिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥ ४ ॥

दोहा

तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।  
 सीत देहु राम कहूँ अहित न होइ तुम्हार ॥ ४० ॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी । कही बिभीषन नीति बखानी ॥  
 सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मृत्य अब आई ॥ १ ॥  
 जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ तोहि भावा ॥  
 कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता में नाहीं ॥२ ॥  
 मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥  
 अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा । अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥ ३ ॥  
 उमा संत कइ इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥  
 तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । रामु भजैं हित नाथ तुम्हारा ॥४ ॥  
 सचिव संग लै नभ पथ गयऊ । सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥ ५ ॥

दोहा

रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।  
 में रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥ ४१ ॥

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं । आयूहीन भए सब तबहीं ॥  
 साधु अवग्या तुरत भवानी । कर कल्यान अखिल कै हानी ॥ १ ॥  
 रावन जबहिं बिभीषन त्यागा । भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥  
 चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥ २ ॥  
 देखिहउँ जाइ चरन जलजाता । अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥  
 जे पद पसरि तरी रिषिनारी । दंडक कानन पावनकारी ॥ ३ ॥  
 जे पद जनकसुताँ उर लाए । कपट कुरंग संग धर धाए ॥

हर उर सर सरोज पद जेई । अहोभाग्य में देखिहँ तेई ॥ ४ ॥

दोहा

जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।  
ते पद आजु बिलोकिहँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥ ४२ ॥

एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा । आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥  
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा । जान कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥ १ ॥  
ताहि राखि कपीस पहिं आए । समाचार सब ताहि सुनाए ॥  
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । आवा मिलन दसानन भाई ॥ २ ॥  
कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा । कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥  
जानि न जाइ निसाचर माया । कामरूप केहि कारन आया ॥ ३ ॥  
भेद हमार लेन सठ आवा । राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥  
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी । मम पन सरनागत भयहारी ॥ ४ ॥  
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना । सरनागत बच्छल भगवाना ॥ ५ ॥

दोहा

सरनागत कहँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।  
ते नर पावँ पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥ ४३ ॥

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू । आएँ सरन तजँ नहिं ताहू ॥  
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं । जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥ १ ॥  
पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजहु मोर तेहि भाव न काऊ ॥  
जौं पै दुष्टहृदय सोइ होई । मोरें सनमुख आव कि सोई ॥ २ ॥  
निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥  
भेद लेन पठवा दससीसा । तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥ ३ ॥  
जग महुँ सखा निसाचर जेते । लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ॥  
जो सभीत आवा सरनाई । राखिहँ ताहि प्रान की नाई ॥ ४ ॥

दोहा

उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।  
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ॥ ४४ ॥

सादर तेहि आगें करि बानर । चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥  
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता । नयनानंद दान के दाता ॥ १ ॥  
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी । रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ॥  
भुज प्रलंब कंजारून लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥ २ ॥  
सिंघ कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ॥  
नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥ ३ ॥  
नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर बंस जनम सुरत्राता ॥  
सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥ ४ ॥

## दोहा

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।  
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ॥ ४५ ॥

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥  
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा । भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा ॥ १ ॥  
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी । बोले बचन भगत भय हारी ॥  
कहु लंकेस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥ २ ॥  
खल मंडलीं बसहु दिन राती । सखा धरम निबहइ केहि भाँती ॥  
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती । अति नय निपुन न भाव अनीती ॥ ३ ॥  
बरु भल बास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ॥  
अब पद देखि कुसल रघुराया । जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ॥ ४ ॥

## दोहा

तब लागि कुसल न जीव कहूँ सपनेहुँ मन बिश्राम ।  
जब लागि भजन न राम कहूँ सोक धाम तजि काम ॥ ४६ ॥

तब लागि हृदयँ बसत खल नाना । लोभ मोह मच्छर मद माना ॥



जब लागि उर न बसत रघुनाथा । धरें चाप सायक कटि भाथा ॥ १ ॥  
 ममता तरुन तमी अँधिआरी । राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥  
 तब लागि बसति जीव मन माहीं । जब लागि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ॥२ ॥  
 अब मैं कुसल मिटे भय भारे । देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥  
 तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला । ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ॥ ३ ॥  
 मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ । सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ॥  
 जासु रूप मुनि ध्यान न आवा । तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ॥४ ॥

## दोहा

अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज ।  
 देखेँ नयन बिरंचि सिव सेव्य जुगल पद कंज ॥ ४७ ॥

सुनहु सखा निज कहँ सुभाऊ । जान भुसुंङि संभु गिरिजाऊ ॥  
 जौं नर होइ चराचर द्रोही । आवौ सभय सरन तकि मोही ॥ १ ॥  
 तजि मद मोह कपट छल नाना । करँ सद्य तेहि साधु समाना ॥  
 जननी जनक बंधु सुत दारा । तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥ २ ॥  
 सब कै ममता ताग बटोरी । मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥  
 समदरसी इच्छा कछु नाहीं । हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥ ३ ॥  
 अस सज्जन मम उर बस कैसें । लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ॥  
 तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । धरँ देह नहिं आन निहोरें ॥ ४ ॥

## दोहा

सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ नेम ।  
 ते नर प्राण समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ॥ ४८ ॥

सुन लंकेस सकल गुन तोरें । तारें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥  
 राम बचन सुनि बानर जूथा । सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥ १ ॥  
 सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी । नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥  
 पद अंबुज गहि बारहिं बारा । हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥ २ ॥  
 सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥

उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥ ३ ॥  
 अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनी ॥  
 एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥ ४ ॥  
 जदपि सखा तव इच्छा नाही । मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥  
 अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमन वृष्टि नभ भई अपारा ॥ ५ ॥

## दोहा

रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।  
 जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड ॥ ४९ क ॥

जो संपति सिव रावनहि दीन्ह दिऐँ दस माथ ।  
 सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्ह रघुनाथ ॥ ४९ ख ॥

अस प्रभु छाडि भजहिं जे आना । ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ॥  
 निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥ १ ॥  
 पुनि सर्वग्य सर्व उर बासी । सर्वरूप सब रहित उदासी ॥  
 बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥ २ ॥  
 सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥  
 संकुल मकर उरग झष जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥ ३ ॥  
 कह लंकेस सुनहु रघुनायक । कोटि सिंधु सोषक तव सायक ॥  
 जद्यपि तदपि नीति असि गाई । बिनय करिअ सागर सन जाई ॥ ४ ॥

## दोहा

प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।  
 बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥ ५० ॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । करिअ दैव जौं होइ सहाई ॥  
 मंत्र न यह लछिमन मन भावा । राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥ १ ॥  
 नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ॥  
 कादर मन कहँ एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ॥ २ ॥

सुनत बिहसि बोले रघुबीरा । ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ॥  
 अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधि समीप गए रघुराई ॥ ३ ॥  
 प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥  
 जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए । पाछें रावन दूत पठाए ॥ ४ ॥

दोहा

सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।  
 प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह ॥ ५१ ॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ । अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥  
 रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥ १ ॥  
 कह सुग्रीव सुनहु सब बानर । अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥  
 सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥ २ ॥  
 बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥  
 जो हमार हर नासा काना । तेहि कोसलाधीस कै आना ॥ ३ ॥  
 सुनि लछिमन सब निकट बोलाए । दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए ॥  
 रावन कर दीजहु यह पाती । लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥ ४ ॥

दोहा

कहेहु मुखागर मूढ सन मम संदेसु उदार ।  
 सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार ॥ ५२ ॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा । चले दूत बरनत गुन गाता ॥  
 कहत राम जसु लंकाँ आए । रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥ १ ॥  
 बिहसि दसानन पूँछी बाता । कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥  
 पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी । जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥ २ ॥  
 करत राज लंका सठ त्यागी । होइहि जव कर कीट अभागी ॥  
 पुनि कहु भालु कीस कटकाई । कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥ ३ ॥  
 जिन्ह के जीवन कर रखवारा । भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ॥  
 कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ॥ ४ ॥

## दोहा

की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर ।  
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥ ५३ ॥

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें । मानहु कहा क्रोध तजि तैसें ॥  
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहिं राम तिलक तेहि सारा ॥ १ ॥  
रावन दूत हमहि सुनि काना । कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥  
श्रवन नासिका काटें लागे । राम सपथ दीन्हें हम त्यागे ॥ २ ॥  
पूँछिहु नाथ राम कटकाई । बदन कोटि सत बरनि न जाई ॥  
नाना बरन भालु कपि धारी । बिकटानन बिसाल भयकारी ॥ ३ ॥  
जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महुँ तेहि बलु थोरा ॥  
अमित नाम भट कठिन कराला । अमित नाग बल बिपुल बिसाला ॥४ ॥

## दोहा

द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि ।  
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ॥ ५४ ॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥  
राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं । तृन समान त्रैलोकहि गनहीं ॥ १ ॥  
अस मैं सुना श्रवन दसकंधर । पदुम अठारह जूथप बंदर ॥  
नाथ कटक महुँ सो कपि नाहीं । जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ॥ २ ॥  
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥  
सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला । पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ॥ ३ ॥  
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ॥  
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका ॥ ४ ॥

## दोहा

सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।  
रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संग्राम ॥ ५५ ॥

राम तेज बल बुधि बिपुलाई । सेष सहस सत सकहिं न गाई ॥  
 सक सर एक सोषि सत सागर । तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर ॥ १ ॥  
 तासु बचन सुनि सागर पाहीं । मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥  
 सुनत बचन बिहसा दससीसा । जौं असि मति सहाय कृत कीसा ॥ २ ॥  
 सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥  
 मूढ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥ ३ ॥  
 सचिव सभीत बिभीषन जाकेँ । बिजय बिभूति कहाँ जग ताकेँ ॥  
 सुनि खल बचन दूत रिस बाढी । समय बिचार पत्रिका काढी ॥ ४ ॥  
 रामानुज दीन्ही यह पाती । नाथ बचाइ जुडावहु छाती ॥  
 बिहसि बाम कर लीन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥ ५ ॥

## दोहा

बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।  
 राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्नु अज ईस ॥ ५६ क ॥

की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।  
 होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥ ५६ ख ॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई । कहत दसानन सबहि सुनाई ॥  
 भूमि परा कर गहत अकासा । लघु तापस कर बाग बिलासा ॥ १ ॥  
 कह सुक नाथ सत्य सब बानी । समुझहु छाडि प्रकृति अभिमानी ॥  
 सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥ २ ॥  
 अति कोमल रघुबीर सुभाऊ । जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥  
 मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही । उर अपराध न एकउ धरही ॥ ३ ॥  
 जनकसुता रघुनाथहि दीजे । एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥  
 जब तेहि कहा देन बैदेही । चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥ ४ ॥  
 नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥  
 करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥ ५ ॥  
 रिषि अगस्ति कीं साप भवानी । राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥

बंदि राम पद बारहिं बारा । मुनि निज आश्रम कहँ पगु धारा ॥ ६ ॥

दोहा

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।  
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥ ५७ ॥

लछिमन बान सरासन आनू । सोषों बारिधि बिसिख कृसानू ॥  
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥ १ ॥  
ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन बिरति बखानी ॥  
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बएँ फल जथा ॥ २ ॥  
अस कहि रघुपति चाप चढावा । यह मत लछिमन के मन भावा ॥  
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥ ३ ॥  
मकर उरग झष गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥  
कनक थार भरि मनि गन नाना । बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥ ४ ॥

दोहा

काटेहिं पड़ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।  
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पड़ नव नीच ॥ ५८ ॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥  
गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥ १ ॥  
तव प्रेरित मायाँ उपजाए । सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥  
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई । सो तेहि भाँति रहें सुख लहई ॥ २ ॥  
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥  
ढोल गँवार सूद्र पसु नारी । सकल ताइना के अधिकारी ॥ ३ ॥  
प्रभु प्रताप में जाब सुखाई । उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥  
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई । करों सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई ॥ ४ ॥

दोहा

सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।

जेहि बिधि उतरैं कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ॥ ५९ ॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । लरिकाई रिषि आसिष पाई ।  
 तिन्ह कें परस किँ गिरि भारे । तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥ १ ॥  
 मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥  
 एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ । जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥२॥  
 एहिं सर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥  
 सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहिं हरी राम रन धीरा ॥ ३ ॥  
 देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥  
 सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥ ४ ॥

छंद

निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ।  
 यह चरित कलि मल हर जथामति दास तुलसी गाउअऊ ॥  
 सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गना ।  
 तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

दोहा

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।  
 सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥ ६० ॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने पञ्चमः सोपानः समाप्तः ।

सुंदरकाण्ड समाप्त